नमस्ते[1]

'नमस्ते' संस्कृत के दो शब्दों नमः और ते से मिलकर बना है । इसमें एक क्रिया अर्थात् 'अस्तु' मिला दिया जाय तो 'नमस्ते अस्तु' पूरा वाक्य बन जाता है । परन्तु संस्कृत में होना अर्थात् 'अस्' धातु के भिन्न भिन्न रूपों का प्रायः लोप कर देते हैं । यथा यह कहना हो कि मैं मनुष्य हूं तो मैं के लिए 'अहम्' और व्यक्ति के लिए 'मनुष्य' अर्थात् 'मनुष्योऽहम्' इतना ही पर्याप्त होगा । हूं के लिए अस्मि लाने की आवश्यकता नहीं है । इसी प्रकार जब नमस्ते कह दिया तो **'नमस्ते अस्तु'** कहने की आवश्यकता नहीं रहती ।

नमस्ते शब्द में नमः का अर्थ–

अब इसके अर्थों की ओर ध्यान दीजिये । नमः का अर्थ है झुकना अथवा सिर झुकाना । संस्कृत में नम क्रिया भी है जिसके कई रूप चलते हैं । नमति=वह झुकता है । नमामि=मैं झुकता हूं परन्तु स्मरण रखिये कि नमस्ते में जो नमः है वह क्रिया नहीं है, अव्य है अर्थात् इसके रूप सदा एक से रहते हैं । यह न संज्ञा है और न क्रिया प्रत्युत आप इसको शब्द अर्थात् अव्यय कह सकते हैं ।

'ते' सर्वनाम है । 'ते' शब्द का अर्थ है तेरे लिये । 'अव्यय' नमः का नियम यह है कि इसके साथ सदा चतुर्थी सम्प्रदान कारक लगता है । 'कृष्णाय नमः' कृष्ण के लिए नमस्कार हो । 'अग्नये नमः' अग्नि के लिए नमस्कार हो । इसी प्रकार नमस्ते अर्थात् तेरे लिए नमस्कार हो ।

---

१. उपाध्याय जी ने उर्दू में इस विषय पर एक ट्रैक्ट लिखा था । हमने ट्रैक्ट के साथ इस लेख का मिलान नहीं किया । लगता है कि कुछ भेद अवश्य है । यह लेख 'वैदिक धर्म' साप्ताहिक उर्दू में उपाध्याय जी के जीवन काल में ही १६ मई सन् १९६८ के अंक में पृष्ठ ५ पर छपा था । लेखक ने स्वयं ही भेजा होगा । **'जिज्ञासु'**

संस्कृत में 'जी' का कोई रूप नहीं–

एक बात और स्मरण रखनी चाहिए कि संस्कृत में मध्यम पुरुष एकवचन के लिए 'तव' शब्द का ही प्रयोग होता था । आदर मान के लिए 'जी' का रूप नहीं आता था । पुत्र पिता को तव कहकर पुकारता था । हिन्दी भाषा में तव के लिए तुम अथवा आप आता है ।

कुछ लोग 'ते' पर चौंक पड़ते हैं–

संस्कृत में तो आजकल 'तव' की बजाय मध्यमपुरुष बहुवचन का प्रयोग करते हैं । आप संस्कृत के भाष्यों यथा शाङ्कर भाष्य आदि में देखेंगे कि गुरु कहता है **'आचार्याः'** । आजकल एकवचन की बजाय बहुवचन बोलेंगे । 'आचार्या आहुः' (आचार्य ने कहा) पुरानी संस्कृत व नई संस्कृत का यह भेद जो लोग नहीं जानते वे नमस्ते के **'ते'** भाग पर चौंकते हैं । अतः मैंने सविस्तार इस बात की व्याख्या कर दी है ताकि विरोधियों से धोखा न खायें । प्रत्येक भाषा के नियम पृथक् पृथक् होते हैं । नमस्ते शब्द तो अत्यन्त प्राचीन है । सनातन है । वेद काल से चला आता है और 'ते' शब्द पर आज पर्यन्त किसी ने आक्षेप नहीं किया । गीता में अर्जुन कृष्ण के लिए और कृष्ण अर्जुन के लिए तव शब्द का प्रयोग करता है । पुराने आर्य एक के लिए एकवचन, दो के लिए द्विवचन और तीन अथवा अधिक के लिए बहुवचन का प्रयोग किया करते थे । इसमें मान अथवा अपमान का कोई प्रश्न ही नहीं था । **आधुनिक सभ्यता में तो धोखा भ्रम हो जाता है** । जब हम कहते हैं **''गुरु जी आ रहे हैं''** तो पता नहीं चलता कि गुरु एक ही हैं अथवा अनेक ।

जब ऋषि ने इस सनातन प्रथा को पुनर्जीवित किया तो–

कुछ भी हो नमस्ते के एकवचन 'ते' से घबराना नहीं चाहिए। यह प्रयोग लोकप्रिय है और किसी विद्वान् पण्डित ने आज तक इस पर आपत्ति नहीं की । जब स्वामी दयानन्द ने इस सनातन पद्धति को फिर से चलाया तो आर्यसमाज का विरोध करने के लिए द्वेष से,

पूर्वाग्रह से बाल की खाल निकालनी आरम्भ कर दी ।[१] आजकल नमस्ते का अभिवादन लोकप्रिय होता जा रहा है । कोई नमस्ते कहने से रोष प्रकट नहीं करता । मेरे बाल्यकाल में तो पुराने ढंग के पण्डितों ने ऐसा वैमनस्य व भ्रम पैदा कर रखा था कि लोग नमस्ते को गाली समझते थे तथा मरने मारने के लिए तैयार हो जाते थे । उन दिनों आर्यसमाज में नमस्ते पर बहुत व्याख्यान व शास्त्रार्थ हुआ करते थे ।

वैदिक युग में 'नमस्ते' का प्रचलन था–

श्री पं० लेखराम जी ने 'नमस्ते' शब्द पर एक लघु पुस्तिका लिखी थी । वैदिक युग में जब एक सज्जन दूसरे सज्जन से मिलता था तो प्रायः 'नमस्ते' ही कहता था । इसके लिए कुछ और भी पर्यायवाची शब्द थे । यथा वन्दना व वन्दने इत्यादि परन्तु अधिक प्रचलित शब्द नमस्ते ही था ।

नमस्ते की विशेषता–

अभिवादन के लिए नमस्ते एक अत्यन्त छोटा तथा सार्थक शब्द है । जो अर्थ गौरव नमस्ते शब्द में है वह किसी अन्य शब्द में नहीं है । यद्यपि आजकल संसार में नमस्ते के स्थान पर अनेक शब्द प्रयुक्त होते हैं यथा 'जय राम जी', 'जय श्री कृष्ण जी', जय शंकर', 'जय शिव', 'जय राधास्वामी', 'अस्लामो अलैक', 'स्लाम', 'गुड मार्निंग' आदि आदि । ये वाक्य किसी राजा अथवा महापुरुष, गुरु अथवा देवता के नाम पर बनाये गये हैं । ये परस्पर मिलने वालों के सम्बन्धों पर प्रकाश नहीं डालते । मुसलमानों का स्लामो अलैक तो अच्छा है क्योंकि इसके अर्थ हैं, ईश्वर आपका भला करे परन्तु जयराम जी तो किसी प्राचीन महापुरुष का स्मरण ही करवाते हैं ।

---

१. पौराणिकों ने ऋषि की एक एक बात अपनाई भी और एक भी बात ऐसी नहीं जिसका पौराणिकों ने विरोध न किया हो । **'नमस्ते नाश कर देगी ।'** ऐसा एक गीत भी कभी प्रचारित किया गया । नमस्ते का खण्डन करने के लिए बीसियों पुस्तकें छापी गईं । जब थक टूट गये और कुछ न बन पाया तो **'नमस्कार'** चला दिया । इसी को कहते हैं रस्सी जल गई परन्तु बल न गया । **'जिज्ञासु'**

महापुरुषों के नाम को याद करना अथवा उन का स्मरण करवाना बुरा नहीं है परन्तु अच्छी बात कहने के लिए भी तो समय, स्थान व परिस्थिति का ध्यान रखना आवश्यक है । नमस्ते शब्द मुसलमानों के 'अस्लामो अलैक' से भी अच्छा है । गुड मार्निंग व अस्लो मो अलैक प्रार्थना वाचक वाक्य हैं । हम परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि आपका कल्याण हो परन्तु हमारा दूसरा क्या कर्त्तव्य है, यह नमस्ते के संक्षिप्त से शब्द से ही प्रकट होता है । तनिक विचारिये। नमस्ते की विशेषता का पता चलेगा ।

अधिकारों को कर्त्तव्यों पर प्राथमिकता देने का महारोग–

ऊपर लिखा जा चुका है कि नमः का अर्थ है झुकना अथवा शीश झुकाना । मनुष्य की यह दुर्बलता है कि वह अपने निजी अधिकारों की ओर अधिक ध्यान देता है तथा यह आशा करता है कि दूसरे लोग उसके अधिकारों का अपने अधिकारों की अपेक्षा अधिक ध्यान रखें । अधिकारों को कर्त्तव्यों से अधिक महत्त्व देना यह संसार के लोगों का सब से बड़ा रोग है । सब युद्ध इसी रोग की उपज हैं । यदि हम अपने निजी अधिकारों की बजाय निजी कर्त्तव्यों का अधिक ध्यान रखें तो अशान्ति के स्थान पर शान्ति हो सकती है । अशान्ति क्यों होती है ? केवल इसलिए कि हम चाहते हैं कि अन्य लोग हमारे लिए झुकें और हम उनके लिए न झुकें । पिता अपने कर्त्तव्यों का विचार न करके भी पुत्र से यह आशा करता है कि वह उसके अधिकारों की रक्षा करे ।

सामाजिक अधिकारों की सुरक्षा–

पुत्र भी यही सोचता है कि यदि पिता अपना कर्त्तव्य न निभाकर केवल अपने अधिकारों की रक्षा चाहता है तो वह ऐसे ही अपने अधिकारों की बलि क्यों दे । इसी प्रकार पति पत्नी, भाई व बहिन, अड़ोसी पड़ोसी, नगर वाले, सगे सम्बन्धी ऐसा ही सोचते हैं। वैदिक प्रथा यह थी कि जब लोग एक दूसरे से मिलते थे तो कहते

थे कि मैं आपके सम्मुख झुकता हूं अर्थात् मैं अपने सामाजिक अधिकार आपके अर्पण करता हूं । जब दोनों ओर से इस विनम्रता की अभिव्यक्ति हो तो प्रेम बढ़ेगा । तनाव खिंचाव नहीं होगा ।

विनम्रता की अभिव्यक्ति का सर्वोत्तम साधन–

नमस्ते का अर्थ है आत्मसमर्पण । आत्मसमर्पण से बढ़कर विनम्रता को व्यक्त करने का मन, वाणी व कर्म से दूसरा कोई भी साधन नहीं है । सन्ध्या के मन्त्रों में हम पढ़ते हैं **'तेभ्यो नमो'** इत्यादि । वहां भी यही नियम है कि यदि हम सृष्टि की विभिन्न शक्तियों के सम्मुख समर्पण कर देंगे तो द्वेष का नाश हो जायेगा ।

समस्त भुजाबल, हृदय के भावों व विचारशक्ति से सत्कार–

श्री पं० अयोध्याप्रसाद जी से अमरीका में पूछा गया कि आपके देश में लोग जब परस्पर मिलते हैं तो किस शब्द का प्रयोग करते हैं ? और कैसे व्यवहार करते हैं ? उन्होंने दोनों हाथ जोड़कर हृदय से लगाकर[१] माथा झुकाकर 'नमस्ते' कहा । लोगों ने कहा, इसकी व्याख्या कीजिये । उन्होंने उत्तर दिया कि इसका अर्थ है, ''जितनी शक्ति मेरे हाथों में है, जितना प्यार मेरे हृदय में है और जितनी विचारशक्ति मेरे माथे में (शीश) में है उन सब से मैं इस आत्मा का आदर करता हूं जो आत्मा आपके भीतर है ।'' यदि जन जन में यह भाव जागृत हो जाय तो मनुष्य के मनुष्य के साथ सामाजिक सम्बन्ध सुधर जायें ।

जो लोग 'ते' शब्द (तेरे लिए) के कारण यह समझते हैं कि छोटा बड़े के लिए कैसे नमस्ते करे । इससे निरादर होता है । ऐसे लोग भूल पर हैं । वे संस्कृत भाषा के नियम नहीं जानते । जो लोग यह समझते हैं कि बड़ा छोटे के आगे क्यों झुके, वे भी भूल करते

---

१. 'वैदिक धर्म' में प्रकाशित लेख में ये शब्द छूट गये हैं । वहां 'माथे से लगा कर नमस्ते कहा' छप गया है । यह किताबत का दोष है । हम इस प्रसंग को जानते हैं सो वाक्य ठीक कर दिया है । अगली पंक्तियों से यह बात और स्पष्ट हो जायेगी । **'जिज्ञासु'**

हैं । वे यह भूल जाते हैं कि आत्मा का आत्मा से सम्बन्ध होता है । पत्नी को पति अधम क्यों जाने ? उसे नमस्ते कहने से क्यों सकुचाये ? **प्रेम में बड़प्पन क्या व छुटपन क्या ?**

'नमस्ते' का अभिवादन कब से छूटा ?—

नमस्ते की परम्परा तब से टूट गई जब से बहुत सम्प्रदाय बन गये तथा प्रत्येक ने अपने-अपने गुरु व इष्टदेव का प्रचार करना आरम्भ कर दिया । स्वामी दयानन्द ने जहां वैदिक युग की अनेक प्रथाओं का उद्धार किया वहां नमस्ते की प्रथा को भी पुनर्जीवित कर दिया । आजकल नमस्ते का प्रचलन बढ़ रहा है ।

आप चाहे बालक हों अथवा वृद्ध यदि योग करना चाहें तो आपको शारीरिक तप से मानसिक तप तथा मानसिक तप से आत्मिक तप तक क्रमशः उन्नति करने का प्रयास करना होगा ।